'स्वांग शकुंतला' के नाट्यगीतों का विश्लेषण और पर्यावरण

चन्द्र पाल
हिंदी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय
संपर्क–**6393177918**
मेल–**chandrapal283@gmail.com**

सुप्रसिद्ध रंगनिर्देशक और कवि,नाटककार अलखनन्दन द्वारा रचित है स्वांग शकुंतला नाटक। यह नाटक कालिदास द्वारा रचित नाटक की पैरोडी है। अलखनन्दन ने इसे आधुनिक संदर्भों में विश्लेषित करने की कोशिश हास्य और व्यंग्य विनोद के माध्यम से की है। स्वांग शकुंतला नाटक सुप्रसिद्ध नाट्य पत्रिका 'नटरंग' के 73वें अंक में प्रकाशित हुआ था। इस नाटक स्त्री अश्मिता के अनेक गंभीर सवालों को उठाने की कोशिश की है। नाटक में समाज की विकृतियों का पर्दाफाश किया गया है। पाखंड का मख़ौल उड़ाया गया है। इसकी अलखनन्दन ने बहुशः प्रस्तुतियां भी दी हैं। बाद कुछ विवाद होते देख अलखनन्दन को इसकी प्रस्तुतियों को रोकना भी पड़ा था। यह नाटक अपने कलेवर में बुन्देली लोकनाट्य शैली में है और बुंदेलखंडी वातावरण का सृजन करने में पूर्णतः सफल हुआ है। यह आपको यूट्यूब पर देखने को भी मिल जाएगा। इसमें अलखनन्दन ने अपनी सूक्ष्म पैनी दृष्टि का इस्तेमाल किया है। अलखनन्दन एक विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्ति रहे हैं। उन्हें समकालीन रंगजगत के मूर्धन्य रंगसाधकों के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यूं अलखनन्दन पेशे से रक्षा विभाग के कर्मचारी से लेकर कवि, पत्रकार,नाटककार, रंगकर्मी, अभिनेता के रूप में हमारे सामने आते हैं। अलखनन्दन अपने समय के सबसे निडर रंगकर्मियों में से एक रहे हैं। बहरहाल यहां बात होगी नाट्यगीतों,गीतों में अभिव्यक्त अनेक विचारों की जो उन्होंने अपने दर्शकों के सामने, पाठकों के सामने रखे थे। एक तरह से देखा जाए तो यह लोकनाट्य बुन्देली के प्रति उनकी उन्मुक्त सृजनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने एक तरह से शास्त्रीय नाटक का आधुनिक लोकनाट्य रूपांतरण किया है। और वह भी चुटीले अंदाज में। इस शोधालेख के माध्यम से आप नाट्यगीतों के निहितार्थों को समझ पाएंगे। नाट्यगीतों में आपको पर्यावरण और व्यंग्य, विनोद पाखंड का विश्लेषण और बौराये प्रेम की तड़प की स्पष्ट झलक मिल जाएगी।

नाट्यगीतों में पर्यावरण

पर्यावरण की समस्या भी अलखनंदन अपने नाट्यगीतों, गीतों में उठाते हैं। जल की कमी, शुद्ध जल की कमी उनको खलती रही है। और घर परिवार की आपसी कलह को आग से कम नहीं मानते थे। वह कलह रूपी आग अपने घर को जलाने वाली कहते हैं, परिवार को जलाने वाली कहते हैं। घर के ही लोग-लोगों को ही अलख जी यमराज रूपी मानते हैं । जो आपसी कलह में मर मिटते हैं। प्रदूषण से सारा संसार हाहाकार कर रहा है। वायु प्रदूषण आज चरम पर है। अमेरिका की जहरीली खाद की अलकनंदन आलोचना करते हैं। इससे धरती जहरीली होती जा रही है। खेतों का रंग काला पड़ने पर विवश है। प्रकृति की प्राकृतिकता विनष्ट की जा रही है। अमेरिका इसके लिए कहीं ना कहीं जिम्मेदार है। जो विकास की अंधी दौड़ में शामिल है। क्योंकि अमेरिका अपने आपको देवता ही कहता आ रहा है लेकिन बहुत कुछ उल्टा भी है। इन सबके उदाहरण अलखनन्दन के नाट्यगीतों में देखिये–

"सूत्रधार : जल जो आजकल
कहीं शुद्ध नहीं मिलता
अग्नि जो भगनियों को
जलाने के काम आती है
यजमान
यानी सास ,ससुर, देवर ननदें
बहुओं की आहुति चढ़ाते हैं
समय के बारे में
भ्रांतियां पैदा करते
आधुनिक चंद्र सूर्य
विश्व पर छाया हाहाकार करता प्रदूषित आकाश
प्राणियों के प्राण हरतीं

गैस भरी हवाएं
अमेरिकी फार्मूले में
बनी खाद से
जहरीली होती धरती
काले पड़ते खेत
इन समस्त रूपों में उद्भासित
जो न्यूयॉर्क निवासी एक राक्षस जी हैं
वह हम सबकी रक्षा करें
क्योंकि हे राक्षस जी
आप ही सुर हैं
और आप ही असुर
खुदा हैं आप ही
आप ही शैतान हैं" नटरंग ,अंक-73,स्वांग शकुंतला ,पृ 6

अफसरशाही की सांठगांठ की पूरी खबर अलखनंदन जी अपने नाट्यगीतों में रखते हैं उनको पता है कि व्यवस्था क्या खेल खेलती है।

"सूत्रधार : जब तक इन सीटों की टोली
मंत्री ,अफसर और हमजोली
खुश ना हों तब तक ओ भोली
चाहे कितनी करे ठिठोली
ग्रांट कहां से आएगी?" वही,पृ6

गर्मी से जनता बेहाल है। और बारिश ही समय से नहीं होती है। पानी की चिकल्लस बढ़ने वाली है। जनता तो त्राहिमाम त्राहिमाम कर ही रही है। लेकिन विलासी वर्ग को इसकी कोई फिक्र नहीं। उन्हें सब सुविधाएं बराबर मिलती रहती हैं। उनमें कटौती नहीं होती। लू से मरना है तो मरेंगे तो गरीब लोग ही, जनता। इससे तो निर्धन प्रजा की ही बिजली कटौती खूब होगी। गरीबों को मच्छर खा लेंगे। उनके शरीर में भी अनेक रंग बिरंगे निशान देखने को मिलेंगे ही। कुछ चंद उदाहरणों से बात पुष्ट हो जाएगी–

नटी : आई गर्मी की बहार
अब हम होंगे जार जार
पिछले साल नहीं हुई वर्षा
अब किल्लत होगी पानी की
जनता की गगरी सूखेगी
छलकेगी राजा रानी की
जनता की गगरी सूखेगी
छलके की राजा रानी की
लू से लोग मरेंगे छम -छम
चलेंगे बीयर बार
आई गर्मी की बहार
उखड़े देहों के पैबंद
खुजा-खुजा चटपटी घमौरी
भूल गए कवि लिखना छंद
आई गर्मी की बहार" वही, पृ6,6

पाखण्ड, प्रेम लीला और व्यंग्यबाण

अलखनंदन अपने नाट्यगीतों में जनता की भी खबर लेते हैं। उसके काहिलीपन पर भी बखिया से उधेड़ देते हैं। केवल उच्च वर्ग की आलोचना नहीं करते अपने नाट्यगीतों में। वह सब की खबर लेते हैं। उनमें व्यंग है, विनोद है, हास्य है और चुटीला पर भी है। उनके गीत अनुपम बन पड़े हैं। जो दर्शकों में गुदगुदी लगाने में पूर्णतया सक्षम हैं। छोटे-छोटे गीतों और तुकबंदियों के

माध्यम से अलखनंदन स्थितियों- परिस्थितियों को अपने नाटकों में स्पष्ट करते चलते हैं। उनके एक-एक गीत, नाट्यगीत नाटक के कथ्य ,कथानक को ,उसकी गतिशीलता को, नाटक के संघर्ष को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। अलखनंदन कवि थे। इसलिए उनको गीत लिखने में आसानी रहती थी। उन्हें शास्त्रीय संगीत का ,लोकगीतों का गहरा ज्ञान था। गहरी समझ थी गहरा बोध था। इसलिए उनके गीत अनोखे और अनुपम बन पड़े हैं। एक गीत का उदाहरण देखिए–

"सूत्रधार : बहुत दिनों का भूखा प्यासा
कल कुछ पैसे झटके थे
पूरी बोतल खुद ही पी ली
एक थे हम बेखटके थे" वही,पृ7

स्वांग शकुंतला नाटक में अलकनंदन ने इसके एक पात्र दुष्यंत के माध्यम से शायरीनुमा और तुकबंदियां करवाई हैं। जिससे पता चलता है की अलखजी के नाट्यगीत हल्के प्रतीत होते हैं। लेकिन यह नाटक भी तो पैरोडी था और लोकनाट्य परंपरा का है। इसलिए इसमें इस तरह की गुंजाइश बनी रहती है। इससे जनता बंधी रहती है। और भागती नहीं है। उनके गीत, उनके नाट्यगीत जनता को ,दर्शकों को बांधे रखते हैं। यह हमें आंसू कविता की ओर इशारा करते हैं। यह गीत आंसू कविता जैसे लगते हैं।

"दुष्यंत : आलू खाना छोड़ दो
पियो मूंग की दाल
जिससे लोच बनी रहे
चलो हिरन की चाल !
जय कामदेव जी की!
मुझे ना भाए गुड़- चीनी
मीठी आपकी बात
मन मेरा तर हो गया
ठंडी हो गई गात
जय कामदेव जी की !
राम झरोखे बैठकर
जग का मुजरा लेय
जो जैसी करनी करें
ताहि तैसो फल देय
दुहरी है काया
घमौरियों की खुजली है
तिस पर दुहना भारी भैंस
अब इतने घाम में उपले बनाएगी
हो जाएगा इसको क्लेस
जय कामदेव जी की" वही,पृ **10,11**

प्रेमजन्य जो पीड़ा है। अलखनंदन के नाट्य गीत उनकी मुखर अभिव्यक्ति देने में पूर्णता सफल हुए हैं। अलख के नाट्य गीतों में आपको चुहलबाजी के स्पष्ट दर्शन हो जाएंगे। उनके नाट्यगीत हास्य, ठहाके लगाते जान पड़ेंगे। गुदगुदी उठे बिना नहीं रह सकती। आप को सस्ती सी शायरी वाला अंदाज इनके यहां देखने को मिल सकता है। ग्रामीण प्रेम के अनुपम प्रेम सौंदर्य की छटा देखिए इन नाट्य गीतों में–

"दुष्यंत : एक अजीब सी
उठापटक से
गुजर रहा हूं मैं
जिसमें कभी शरीर
दाएं जाता है तो मन बाएं
कभी मन बाएं जाता है
तो शरीर दाएं

ऐ मन तू ही बता
जाएं तो कहां जाएं? वही,पृ**12**
" दुष्यंत : जिसकी बहन अंदर
उसका भाई सिकंदर
देखत रह गए लल्लू लाल
ले गओ माल कलंदर" वही ,पृ**13**

(शकुंतला पत्र लिखती है। गीत सुनाई पड़ता है**)**

"सजन तेरी अँखियां
गड़ गई छतियों में
दिन भर तेरी याद सतावे
नींद ना आए रतियों में
दिल धड़के, तन चटके
मन बन- बन में भटके
सांस गरम तपती सी
लगें खटाखट झटके
बातें ना बने कौनो बतियों में
सजन तेरी अँखियां
गड़ गई छातियों में" वही,पृ**15**

पाखंडी और ढोंगी बाबाओं की खबर भी अलखनंदन अपने नाट्यगीतों में लेते हैं। इन लुटेरों से सावधानी ही अच्छी है। इन से दूरी बनाकर रखना ही अच्छा है। यह लोगों, आम जनता को ठगते हैं। आम जनता को और जनता भी इनके बहकावे में खूब आ जाती है—

" अंतर्यामी : **(** गाता है ,लोग दोहराते हैं**)**
बाबा पक्का अंतर्यामी
कौन है सज्जन
कौन कमीना
जानत कौन हरामी
बाबा पक्का अंतर्यामी
चोर कौन मन
मोर कौन है
को है विषयी-कामी
बाबा पक्का अंतर्यामी" वही ,पृ**22**
"अंतर्यामी : प्रभु का भजन करले मनवा
प्रभु रस पी ले रे
कें कें मत कर नाम सुमर ले
कुत्ते पापाचारी
धाम सुमिर ले
राम सुमिर ले
ओ मन व्यभिचारी
प्रभु रस पीले रे" वही,पृ**23**

आखिरकार अलख नंदन यह जानते हैं की जनता की जो दुर्गति होनी है वह होनी ही है। इसलिए संभल कर रहने में ही भलाई है। ऐसा अलख जी अपने अंतिम नाट्य गीत के माध्यम से लोगों को आगाह करते जान पड़ते हैं ।कोई आपको लूट ना ले ,कोई बाधा ना बने आप की संभलने में ही भलाई है। नाटक अभी जरूर खत्म हो रहा है। लेकिन नाट्यगीतों के सुखात्मक संदेशों के साथ—

"सभी कलाकार मंच पर आकर गाते हैं
गीत : खत्म हुआ नाटक अब तो
अपने -अपने घर जाओ
सोते- जगते
चलते-फिरते
धक्के-मुक्के खाओ
सम्हल के कोई जेब ना काटे
चलते-फिरते टांग ना खींचे
देख के कोई मूंछ ना काटे
बचा के कोई लांग ना खींचे
बचे हुए ताहिरों- ब्रिजों को
बढ़ो,बचाओ
खत्म हुआ नाटक अब तो" वही,पृ**27**